बाँस पौधरोपण और जागरूकता कार्यक्रम की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत दिनाँक 17 जनवरी, 2022 को ग्राम पंचायत रझाना, के बड़ागाँव और पट्टी गाँव के लगभग 40 किसानो ने बाँस पौधरोपण एवं जागरूकता कार्यक्रम मे सक्रिय रूप से भाग लिया। इस अवसर पर ग्राम बड़ागाँव के आसपास 300 लाठी बाँस के पौधों का रोपण किया गया। संस्थान के निदेशक **डॉ. एस. एस. सामंत,** वैज्ञानिक **डॉ॰ संदीप शर्मा, डॉ॰ अश्वनी तपवाल, डॉ॰ राजकुमार वर्मा,** ने बाँस के विभिन पहलुओ पर ग्रामीणो को अवगत करवाया। इस अवसर पर प्रतिभागीओ को संस्थान द्वारा स्थापित मॉडल नर्सरी,बड़ागाँव में भ्रमण करवाया गया तथा उन्हे उच्च गुणवता वाले वानिकी तथा औषधीय पौधों को तेयार करने की विधि से भी अवगत करवाया गया।

कार्यक्रम के अंत में **रीना ठाकुर, प्रधान** रझाना पंचायत ने संस्थान के निदेशक व वैज्ञानिक का इस तरह के कार्यक्रम का आयोजन करने पर धन्यवाद दिया तथा आश्वाशन दिया कि भविष्य मे भी वे इस तरह के कार्यक्रम मे वक़्त वक़्त पर हिस्सा लेगे तथा पर्यावरण बचाने में अपनी अहमभूमिका निभायांएगे।

कार्यक्रम की झलकियां

<table>
<tr>
<td> </td>
<td> </td>
</tr>
<tr>
<td>
</td>
<td> </td>
</tr>
</table>

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर हिमाचल 18-01-2022

अश्वगंधा, दाल-चीनी, गिलोए, तुलसी का उपयोग कोरोना में है कारगर

रझाना पंचायत में एचएफआरआई ने लगाए बांस के पौधे, ग्रामीणों से साझा की जानकारी

शिमला| हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा सोमवार को शिमला की रझाना पंचायत के बड़ागांव और पट्टी गांव में बांस पौधरोपण और जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, स्टाफ एवं रझाना पंचायत के ग्रामीणों सहित 60 लोगों ने भाग लिया। बड़ागांव और पट्टी गांव के समीप नाले किनारे 300 बांस के पौधे लगाए गए। एचएफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक डॉ. एसएस सामंत ने बताया कि अश्वगंधा, दाल-चीनी, गिलोए, तुलसी का उपयोग कोरोना के लिए उपयुक्त कारगर है। डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि बांस पौधों का एक बहुमुखी समूह है, जो पारिस्थितिक प्रदान करने में सक्षम है और लोगों को आर्थिक और आजीविका सुरक्षा भी

बड़ागांव और पट्टी गांव के पास नाले किनारे 300 बांस के पौधे लगाए गए।

प्रदान कर सकता हैं। उन्होंने बताया कि भारत में बांस की 136 प्रजातियां हैं, जिसमें से 125 स्वदेशी और 11 विदेशी हैं। उन्होंने बताया कि बांस पौधरोपण से भूक्षरण कि रोकथाम होगी और चारा भी उपलब्ध होगा। उन्होनें बताया कि संस्थान बांस की नर्सरी बीड प्लासी नालागढ़ में तैयार की है, अगर ग्रामीण अपने खेत के आसपास बांस पौधरोपण करना चाहते हैं, तो वहां से बांस के पौधे ले सकते हैं। डॉ. अश्वनी तपवाल ने बांस की नर्सरी एवं पौधरोपण पर जानकारी दी। वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार वर्मा ने बांस के पारिस्थितिक महत्व के बारे में बताया।

रझाना पंचायत प्रधान रीना ठाकुर ने संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों का उनकी पंचायत में बांस पौधरोपण एवं जागरूकता कार्यक्रम करवाने के लिए आभार जताया। जबकि उपप्रधान मुकुंद मोहन ने रझाना पंचायत में नाले किनारे बांस पौधरोपण का आग्रह किया।